IJEASM International Journal of Engineering Applied Science and Management
ISSN (Online): 2582-6948
Vol. 7 Issue 3, March 2026

श्री रामचरितमानस मे अरण्य संस्कृति और प्रकृति दर्शन संचेतना

डॉ.अर्चना पंचोली [1]
प्राध्यापक (वनस्पति शास्त्र)
स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर,
महाविद्यालय(PMCoE) नीमच (म.प्र.)

गिरीश कुमार शर्मा [2]
सहायक प्राध्यापक (वनस्पति शास्त्र)
शासकीय महाविद्यालय नरसिंहगढ़
जिला- राजगढ़(मध्य प्रदेश)

शोध सारांश : *यदि भारत भूमि की ऐतिहासिक और पौराणिक विरासत का विंहगावलोकन किया जाए तो ज्ञात होता है कि संपूर्ण विश्व पटल पर भारत की वैदिक संस्कृति में प्रकृति दर्शन अद्भुत और अद्वितीय है। आध्यात्मिक दृष्टि से देखा जाए तो भारत भूमि प्राचीन और पवित्र भूमि है जहां दर्शन और आध्यात्मिक की धाराओं में संपूर्ण विश्व में एक अलग ही पहचान है राम- कृष्ण की इस पावन धरा पर वेदों, पुराणों, उपनिषदों , ग्रंथों, महा ग्रंथों में प्रकृति संचेतना का उदाहरण मिलता है। तुलसी काव्य और श्री रामचरितमानस में वन और पर्यावरण के महत्व और प्रकृति दर्शन भली-भांति मिलता है। भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में यह न केवल वनस्पति शास्त्र विषय के लिए एक महत्वपूर्ण अध्ययन है बल्कि पर्यावरण जैसे महत्वपूर्ण विषय में यह प्रकृतिविदों और पर्यावरणविदों के लिए बहु उपयोगी साबित होगा। श्री रामचरितमानस में विभिन्न प्रसंगों के द्वारा पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी संवेदनशीलता और प्रतिबद्धता का उल्लेख किया है प्रकृति के अभाव में काव्य निष्प्राण है काव्य या महाकाव्य को सजीवता प्रकृति के द्वारा ही प्रदान की जाती है।*

मुख्य शब्द *- पौराणिक विरासत, महाकाव्य, वैदिक संस्कृति, प्रकृति*

परिचय : जब हम अपने देश के गौरवशाली अतीत का अध्ययन करते हैं तो ज्ञात होता है कि भारतवर्ष कितना संपन्न और कितनी विविधताओं से भरा हुआ देश है । गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित श्री रामचरितमानस एक अनुपम कृति है जिसमें प्रकृति का सुंदर एवं सजीव चित्रण किया गया है वहीं जैव विविधता जैसे पशु -पक्षी, पेड़ पौधे आदि को भी उन्होंने अपने काव्य रूपों में प्रस्तुत किया है । श्री रामचरितमानस एक महान ग्रंथ ही नहीं ,वरन् यह प्रकृति दर्शन संचेतना और पर्यावरण संरक्षण का भी महान संदेश देती है और संवेदनशील दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है इसमें प्रकृति- मैत्री की स्पष्ट झलक मिलती है।

श्री रामचरितमानस और जैव विविधता

श्री रामचरितमानस वन्य जीव जंतु पेड़ -पौधों के प्रति संवेदनशीलता का संदेश देता है। जैव विविधता और उसके संरक्षण से संबंधता दर्शाता है , बाली ,सुग्रीव, हनुमान, जटायु (गिद्धराज) कस्तूरी मृग ,नल, नील ,जामवंत, अंगद आदि श्री रामचरितमानस के ऐसे पात्र हैं जो मानव प्रकृति और जैव विविधता के मध्य संबंध को मजबूती प्रदान करते हैं। वहीं दूसरी और अनेक पौधे जैसे पीपल ,तुलसी ,आम ,बरगद, अशोक ,बैर, सीताफल आदि जो पादप जैव विविधता के महत्वपूर्ण अंग है और श्री रामचरितमानस से संबंधता प्रदर्शित करती है।

IJEASM International Journal of Engineering Applied Science and Management
ISSN (Online): 2582-6948
Vol. 7 Issue 3, March 2026

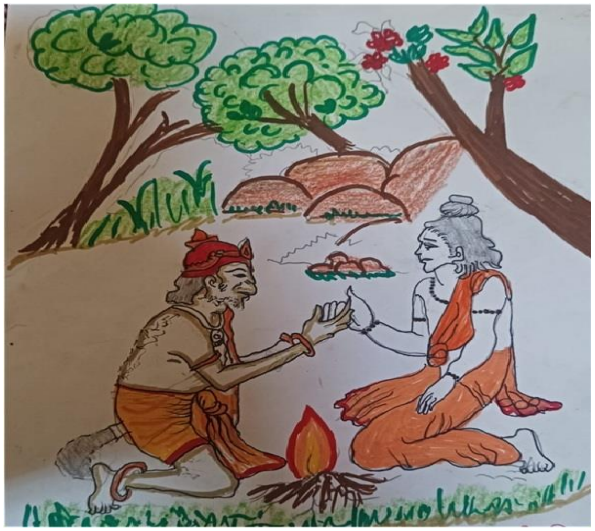

श्री रामचरितमानस और अरण्य संस्कृति

श्री रामचरितमानस में अरण्य संस्कृति, एक ऐसी संस्कृति को परिचित कराती है जो प्रकृति के सानिध्य में जीवन व्यतीत करते हैं उनकी पूजा करते हैं ।यह प्रकृति और आध्यात्मिकता के बीच गहरे संबंध को इंगित करते हैं श्री रामचरितमानस में जो वनवास काल का वर्णन है । इसमें भगवान श्री राम और उनके परिवार का वन में व्यतीत किए गए समय का वृतांत है। अरण्य संस्कृति वनवासी जीवन का चित्रण है जिसमें शबरी ,जटायु, वानर सेना, ऋषि- मुनि ,पेड़- पौधे और वन्य जंतुओं का वर्णन मिलता है, जो जैव विविधता और प्रकृति संरक्षण का दर्शन है ।यह नैतिकता और संस्कृतिकता का पाठ सिखाती है, वहीं चुनौतियों का सामना जीवन में किस प्रकार किया जाता है जैसी जीवन मूल्य की शिक्षा भी प्रदान करती है।

श्री रामचरितमानस और आयुर्वेद

भारतीय ज्ञान परंपरा वैदिक परंपरा है जिसमें ऋषि मुनि अपने जीवन यापन करने के लिए पूर्णतः पौधे और प्रकृति के सानिध्य में निर्भर रहते थे। यहीं से आयुर्वेद का विवरण मिलता है जिसका उद्देश्य स्वस्थ शरीर ,संतुलित मन और जीवन का दीर्घायु होना है । श्री रामचरितमानस में आयुर्वेद का वृतांत मिलता है जिसमें रोगों का प्राकृतिक उपचार जड़ी-बूटियां ,औषधि पौधों आदि से किया जाता है। लक्ष्मण शक्ति के द्वारा मूर्छित होने पर उपचार हेतु संजीवनी बूटी का उपयोग आयुर्वेद के पारंपरिक ज्ञान को दर्शाता है

श्री रामचरितमानस मे प्रकृति एवं पर्यावरण का समावेश

हमारे चारों ओर के पर्यावरण में ऐसे तत्व विद्यमान है जो पंचतत्व कहलाते हैं ,पृथ्वी ,जल अग्नि , आकाश और वायु जो हमारे शरीर के निर्माण में अपनी भूमिका का निर्वाह करते हैं। इस बात को श्री रामचरितमानस में उल्लेखित किया गया है –

क्षिति, जल ,पावक ,गगन, समीरा । पंच रचित यह अधम शरीरा।।

प्रकृति और पर्यावरण में ये पांच तत्व संतुलन की स्थिति में होते हैं। किंतु जब इन पांच तत्वों की असंतुलन की स्थिति निर्मित होती है तो हमारा शरीर अस्वस्थ हो जाता है।

सीता हरण के पश्चात जब प्रभु श्री राम, माता सीता को वन में ढूंढ रहे थे तब इन्होंने पक्षियों, जंतुओं ,पेड़ -पौधों से भी माता- सीता के बारे में पूछा-

हे खग ,मृग ,हे मधुकर श्रेनी । तुम देखी सीता मृगनयनी।।

जब भगवान श्री रामचंद्र जी वाल्मीकि ऋषि के आश्रम में पहुंचे तो वहां की प्राकृतिक छटा और सौंदर्य, सुंदरवन ,पवित्र जल ,और पर्वत आदि को देखकर प्रफुल्लित हो गए।

श्री रामचरितमानस में उल्लेखित किया गया है

सरनि सरोज बिटप बन फूले। गुंजत मंजु मधुप रस भूले।।

खग ,मृग विपुल कोलाहल करही। बिरहित बैर मुदित मन चरही ।।
चित्रकूट, कामदगिरि पर्वत ,सरयू नदी, अशोक वाटिका ,अनेक नदियों और पर्वतों का उल्लेख जो श्री रामचरितमानस में मिलता है वह प्रकृति और पर्यावरण संचेतना का ही दर्शन है ।

निष्कर्ष

श्री रामचरितमानस में प्रकृति चित्रण के सभी रूपों का उल्लेख मिलता है प्रकृति के विभिन्न अवयवों जैसे पेड़- पौधे, नदी, पर्वत, वन, एवं जीव- जंतु का विस्तार से वर्णन उक्त मानस में स्पष्ट रूप से मिलता है यह पर्यावरण एवं प्रकृति सुरक्षा के प्रति संवेदनशीलता का सुंदर उदाहरण है ,श्री रामचरितमानस में मनुष्य की प्रकृति की प्रति असीम श्रद्धा पर्यावरण सुरक्षा को बल प्रदान करती है अतः श्री रामचरितमानस प्रकृति दर्शन एवं संचेतना के ज्ञान की संवाहक है यह भारतीय ज्ञान परंपरा के संदेशों का एक सशक्त माध्यम भी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1] श्री बालकृष्ण जी, कुमावत रामराज्य में प्रकृति और पर्यावरण
[2] ऋषिपाल (2019), रामचरित् मानस में प्राकृतिक पर्यावरण चेतना
[3] डॉ.पूजा रानी (2018), तुलसी के रामचरितमानस में प्रकृति चित्रण
[4] निशांत उपाध्याय (2024),प्रकृति पुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की पर्यावरणीय संचेतना
[5] श्री रामचरितमानस